मलमूत्र

लेखन और चित्र : सौरभ फडके

हिंदी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

31 अक्टूबर 2009

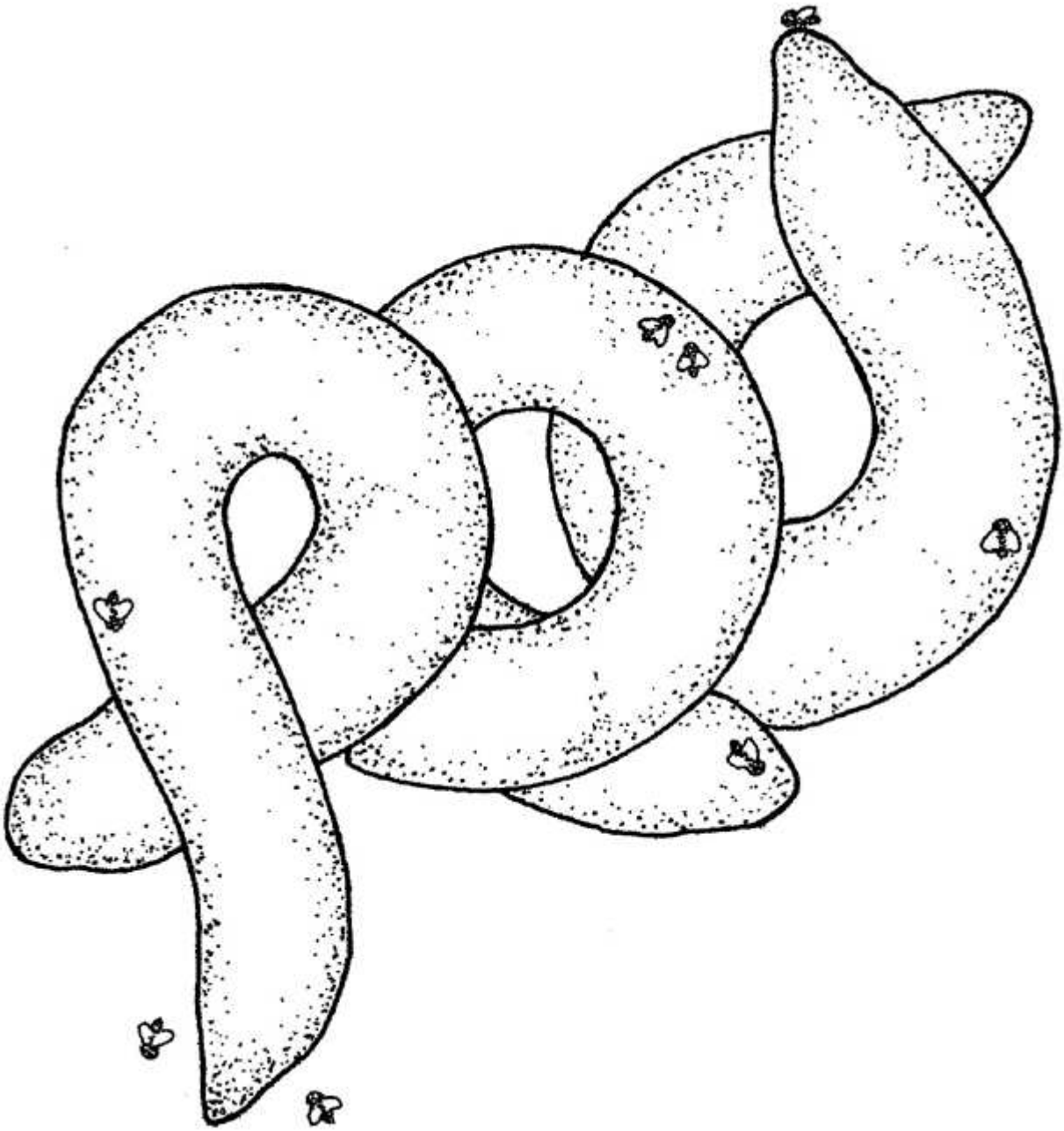

कुछ लोग मलमूत्र संबंधी चर्चा को 'गंदा', 'अश्लील', 'बचकाना' 'बकवास' और समय की बरबादी समझते हैं। पर असल में मलमूत्र का बुनियादी विषय गंभीर चर्चा का हकदार है। यह जरूरी है कि हम अपनी पुरानी मान्यताओं से मुक्त होकर आगे बढ़ें। क्योंकि आज भी दुनिया में लाखों-करोड़ों लोग बुनियादी शौचालयों की सुविधाओं से वंचित हैं। लोगों ने शौच के विषय पर तमाम मजाक भी रचे हैं।

– सौरभ फडके

पुस्तक उपयोग करने वालों से विनती

पुस्तक की सामग्री को अपनी परिस्थितियों के अनुरूप बदलें।

इस पुस्तक से आप बच्चों के लिए रंग भरने की किताब, या इस पर आधारित कहानियां रच सकते हैं। आप इन चित्रों का उपयोग कर मलमूत्र के विषय पर चर्चा कर सकते हैं। या फिर इस कागज का 'टॉयलेट-पेपर' जैसे उपयोग कर सकते हैं (सावधानी: यह कागज धारदार है)।

पुस्तक का अपनी मनमर्जी से उपयोग करें!

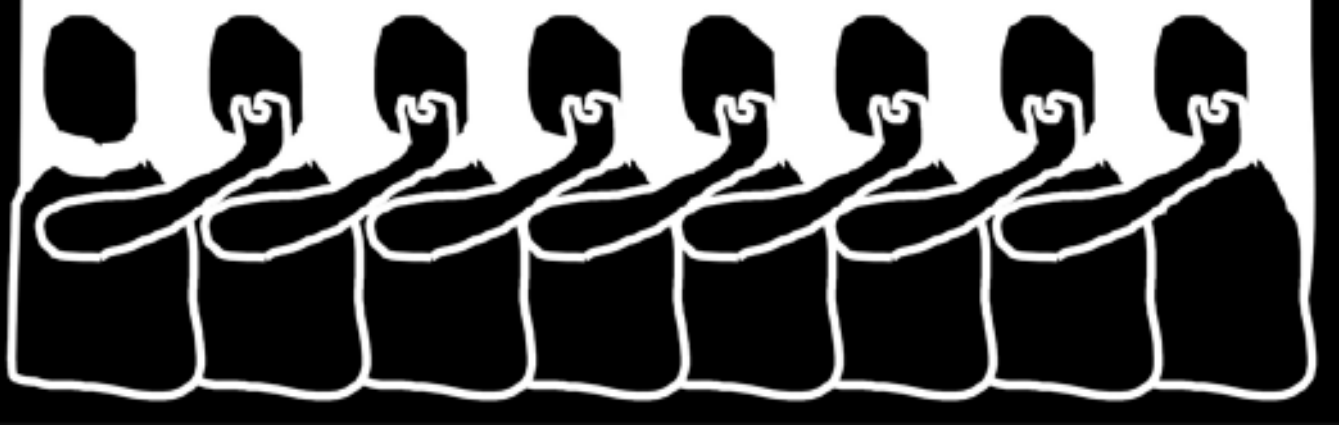

शौचालय क्यों?

अगर आपके पास नहीं है तो . . .

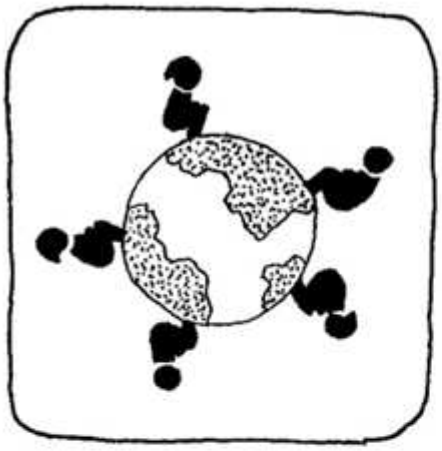

टट्टी-पेशाब सब लोग करते हैं..

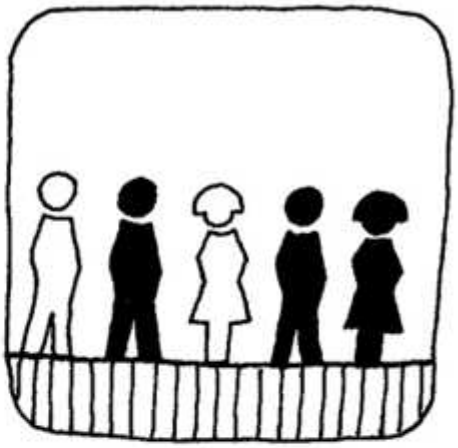

फिर भी दुनिया की 2/5 आबादी को बुनियादी शौचालय उपलब्ध नहीं हैं।

शौचालयों से अधिकांश बीमारियां कम होती हैं।

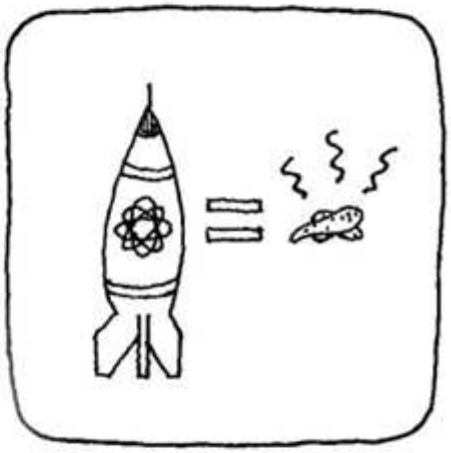

उनके द्वारा युद्ध में मरने वाले लोगों से ज्यादा जानें बच सकती हैं!

शौचालय औरत-मर्द के रिश्तों में बराबरी लाते हैं।

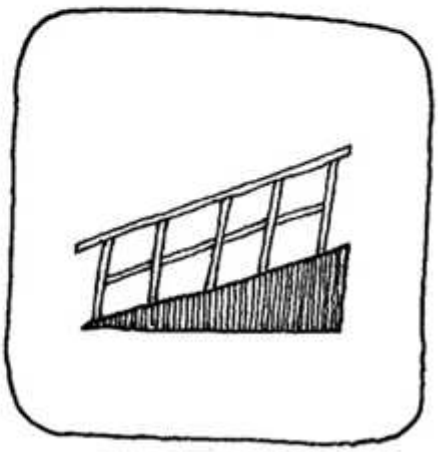

उनसे शिक्षा और रोजगार को बढ़ावा मिलता है।

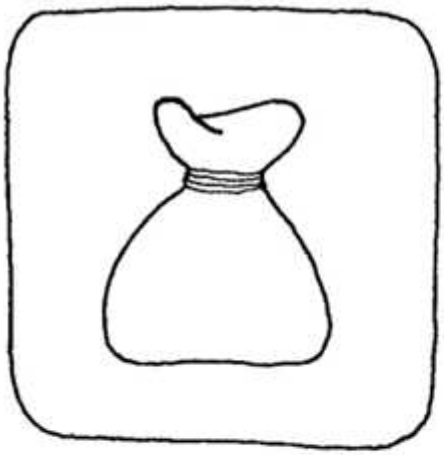

शौचालयों से पूंजी बढ़ती है।

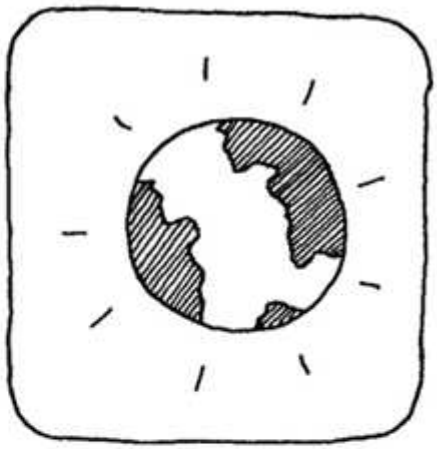

और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।

शौचालय सम्मान के प्रतीक हैं।

शौचालय सुविधा के प्रतीक हैं।

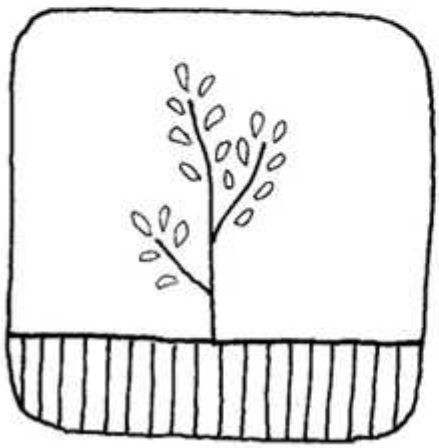

शौचालय से मिट्टी उर्वर होती है।

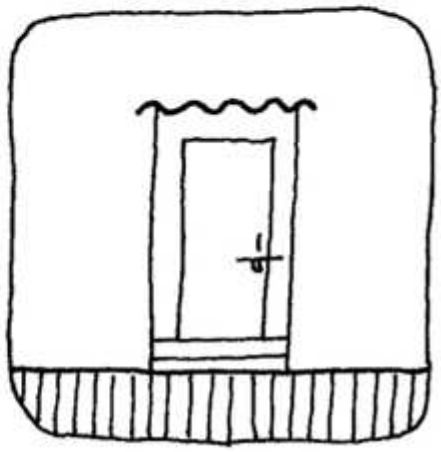

शौचालय महज एक टट्टी-घर नहीं होता।

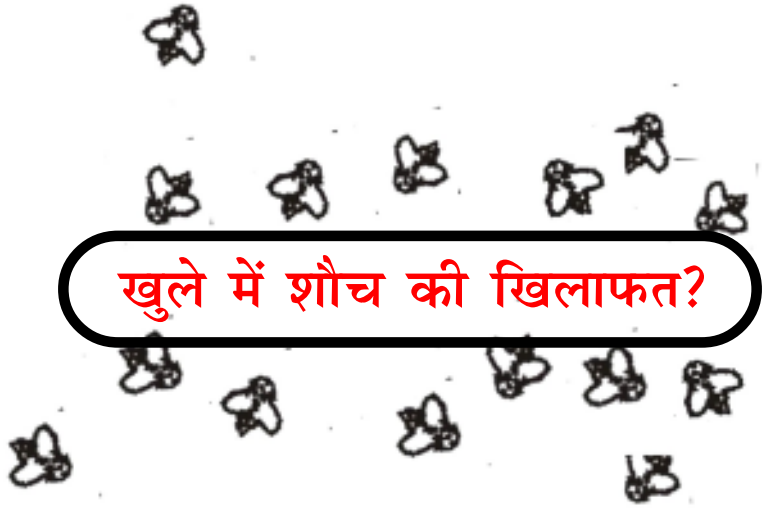

खुले में शौच की खिलाफत?

खुले में शौच करना निंदनीय है...

सुबह-सुबह टहलने का और
ठंडी हवा का अहसास।

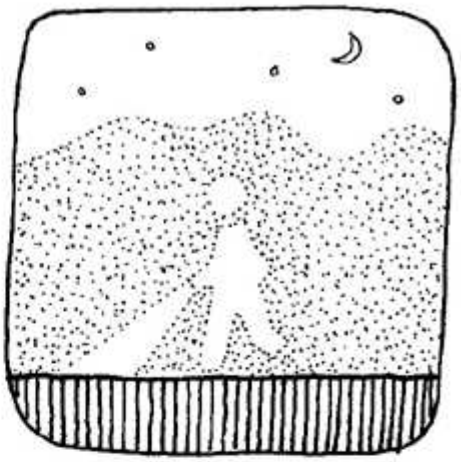

हो सकता है आपको देर रात को
भी बाहर जाना पड़े।

वाह! सुंदर-सुहाना वातावरण।

हर उपयोग से सुंदरता कम होती है।

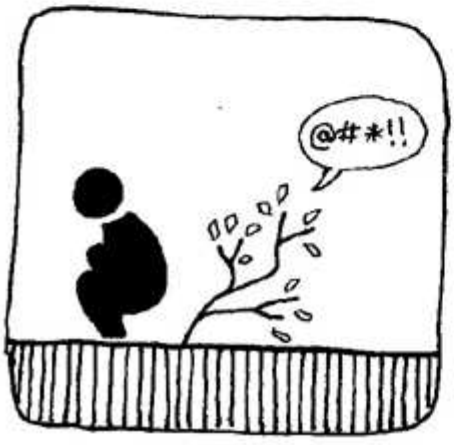

पौधों को सीधे खाद मिलती है।

खाद डालने के ज्यादा सुरक्षित
और बेहतर तरीके हैं।

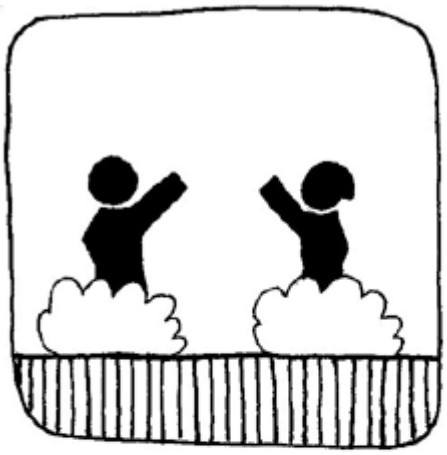

मित्रों से मिलना हो जाता है।

हरेक को सोच-विचार का समय चाहिए।

प्रकृति से सीधा साक्षात्कार होता है।

यह अनुभव खतरनाक भी हो सकता है।

मलमूत्र घर से दूर रहता है।

बूढ़ों / अपंगों के लिए यह काम मुश्किल है।

रेखाओं से गोलों की ओर

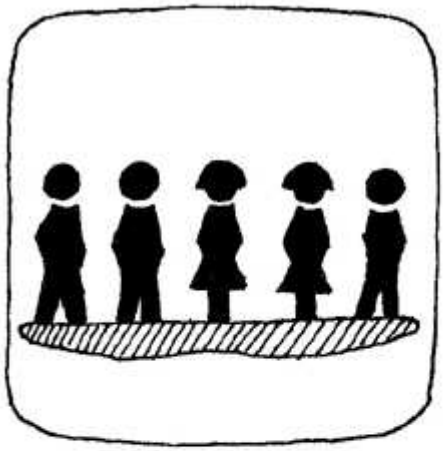

हमें चपटी धरती पर रहना
सिखाया गया है।

हम अपने से आगे वाले को
'कचरा' थमाने के आदी हैं।

परंतु क्योंकि असली दुनिया गोल है।

इसलिए यह 'कचरा' फिर
हमारे पास वापस आता है!

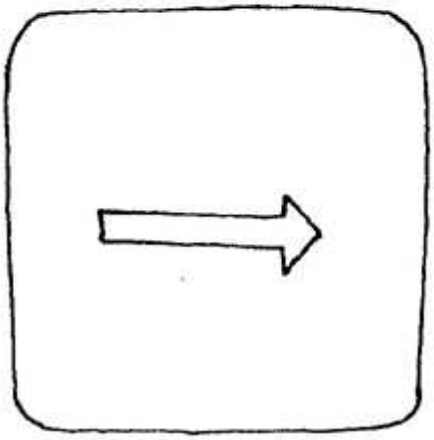

सीधी रेखा वाले हल बेकार हैं।

हमें इस गोल 'लूप' को बंद
करना सीखना होगा।

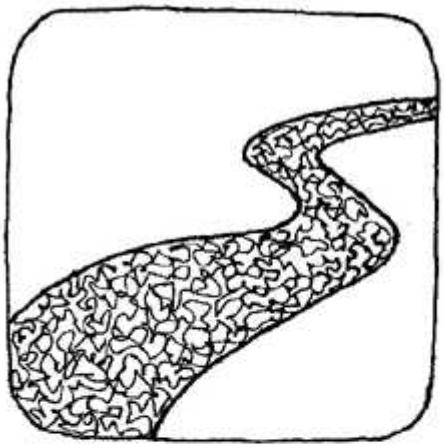

एक ओर कचरे के पौष्टिक तत्वों से हमारी नदियां फल-फूल रही हैं।

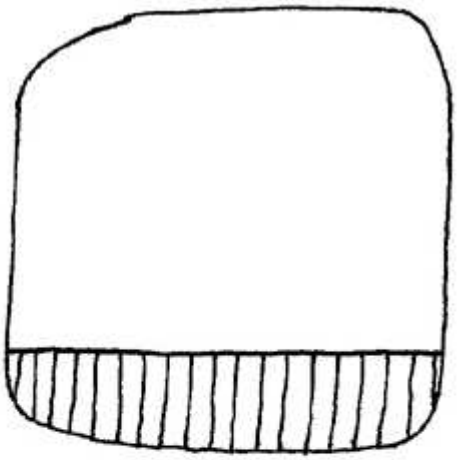

दूसरी ओर हमारी जमीन बेजान और बंजर होती जा रही है।

आज दुनिया में अनाज की बेहद किल्लत है।

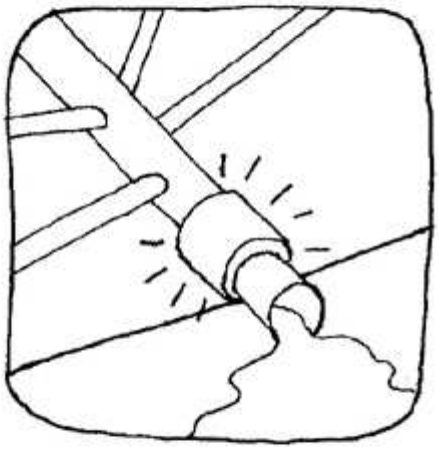

हम फालतू के हलों पर करोड़ों-अरबों रुपए लुटाते हैं।

परंतु अपनी गलत आदतों को नहीं सुधारते।

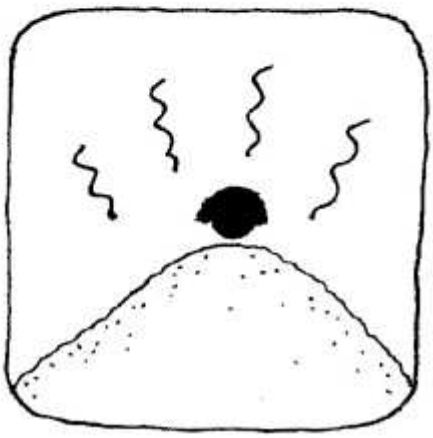

इसलिए तो हम समस्याओं के गहरे गड्ढे में डूबे हैं।

कदम 1 | कदम 2 | कदम 3 | कदम 4 | कदम 5

अनाज उपजाओ / खरीदो | उसे पकाओ! | उसे खाओ! | शौच करो! | जादुई छेद में फ्लश करो!

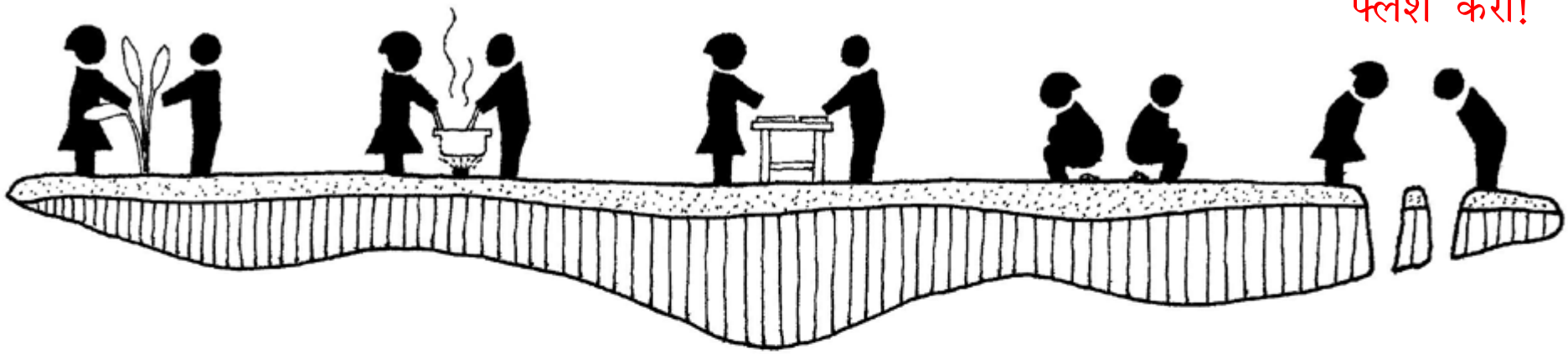

चपटी धरती पर रहने वालों की जिंदगी...

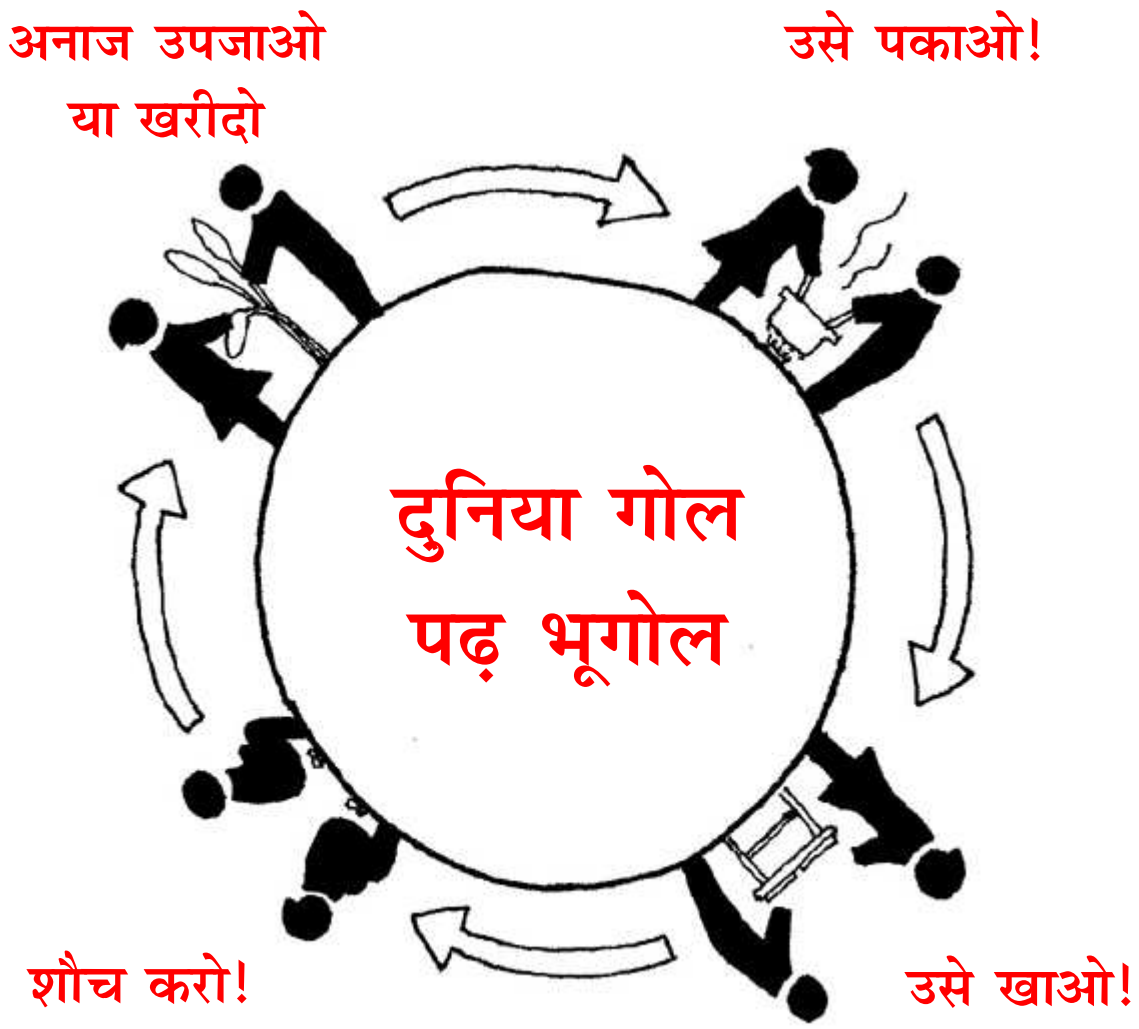

इस लूप में शौचालय का रोल कहां है, अनुमान लगाएं?

उत्तर: हर जगह!!

असलियत क्या है!

एक इंसान हर साल 50 लीटर मल और 500 लीटर मूत्र त्यागता है।

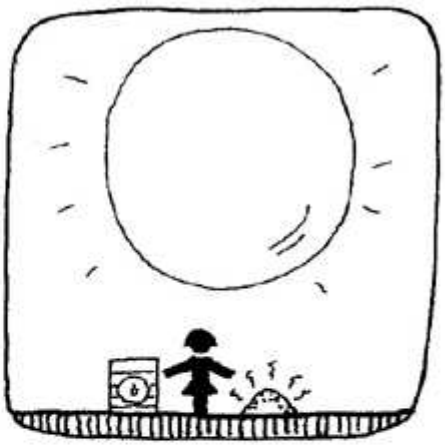

परंतु उसे फ्लश करने के लिए 15,000 लीटर शुद्ध पानी उपयोग करता है!

उतना ही पानी नहाने-धोने में इस्तेमाल करता है।

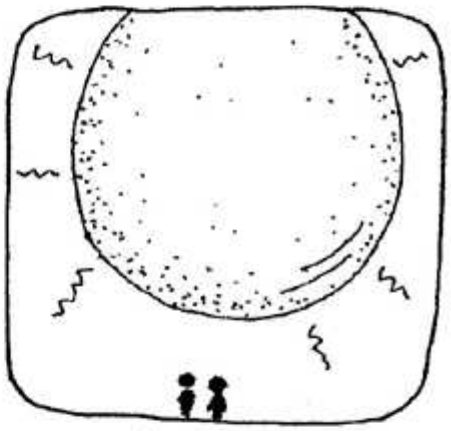

इस तरह हम अथाह पानी गंदा और प्रदूषित करते हैं!!

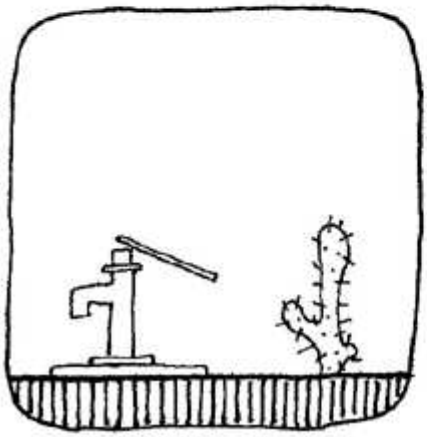

करोड़ों लोग साफ पानी के अभाव में मर रहे हैं।

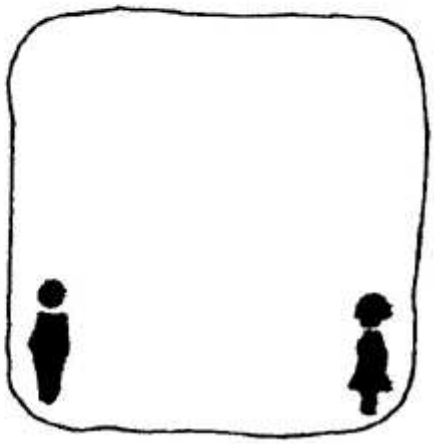

इसलिए हमें साथ मिलकर इस स्थिति को सुधारना चाहिए।

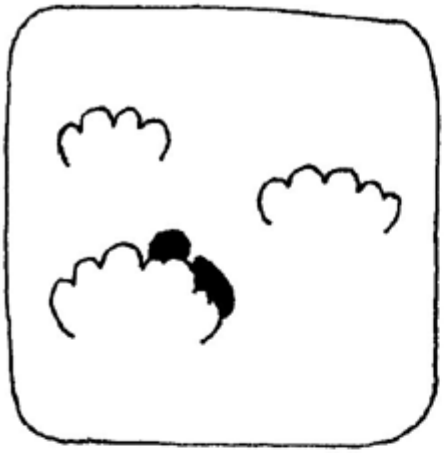

एक ओर साधनों का अभाव है।

दूसरी ओर कुछ लोग जरूरत से ज्यादा खर्च रहे हैं।

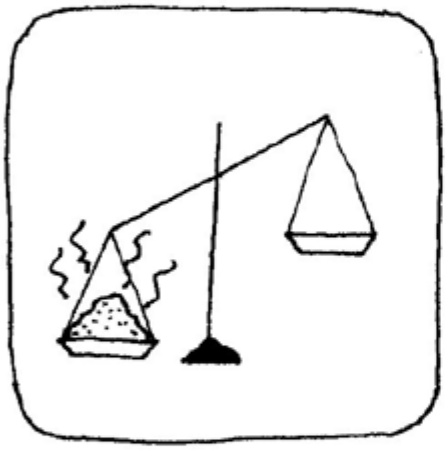

इसीलिए संतुलन डगमगा गया है।

हमें अपनी आदतों को बदलना होगा। वो भी जल्दी!

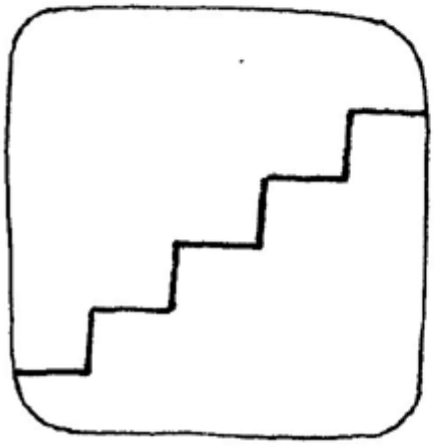

कुछ लोगों को नीचे उतरना होगा, जिससे बाकी ऊपर चढ़ सकें।

अगली बार फ्लश करने से पहले इस बारे में जरूर सोचें!

मल और मूत्र

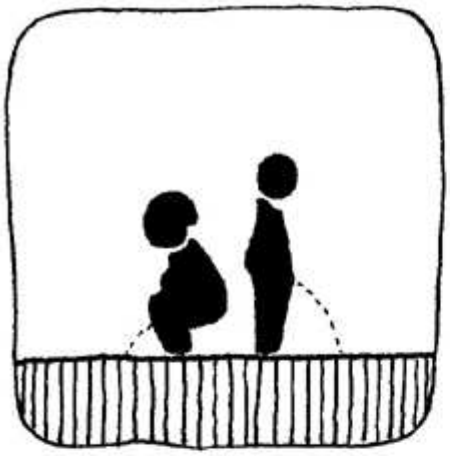

पेशाब करना दुनिया की शायद सबसे बड़ी खुशी है!

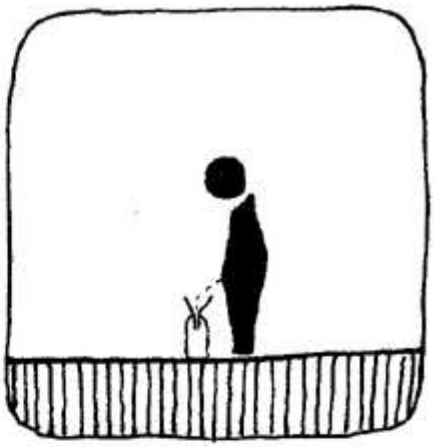

हम रोजाना एक लीटर से अधिक मूत्र त्यागते हैं।

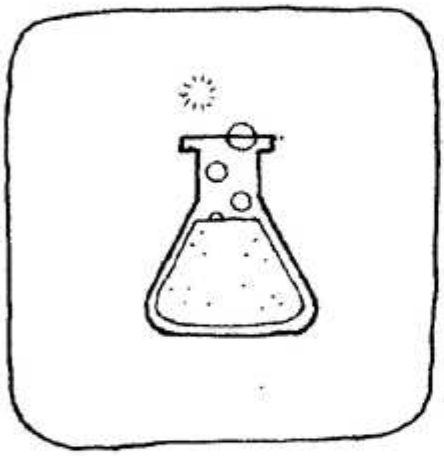

मूत्र एक जटिल रासायनिक शरबत है।

वो कोई नुकसान नहीं पहुंचाता।

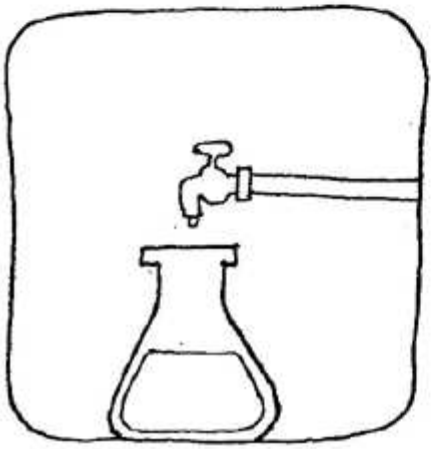

उसमें ज्यादातर तो पानी होता है।

साथ में तमाम केमिकल्स भी होते हैं!

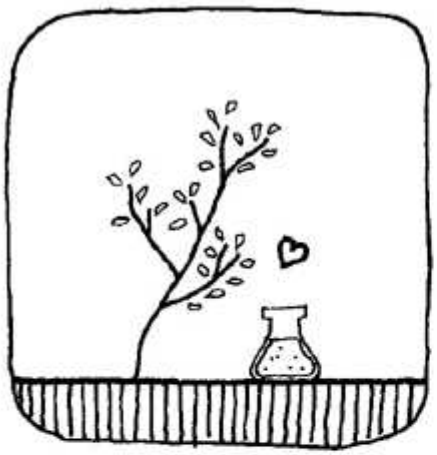

पेशाब एक उम्दा उर्वरक भी है।

पर उपयोग से पहले उसमें पानी मिलाना जरूरी है।

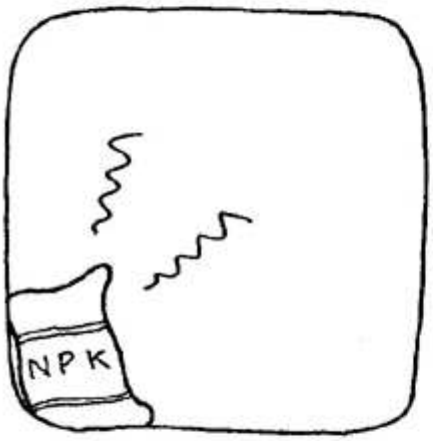

फिर भला रासायनिक खाद की क्या जरूरत!

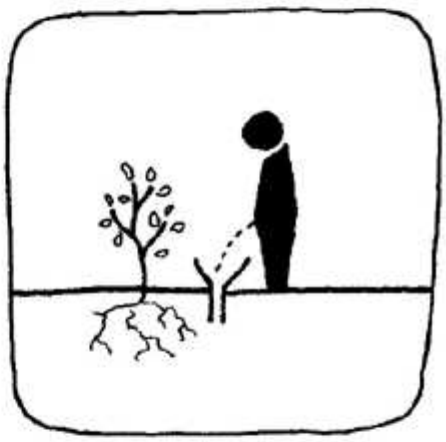

मूत्र के नियमित उपयोग से...

....हमें बेहतरीन नतीजे मिल सकते हैं।

पेशाब बड़े काम की चीज है!

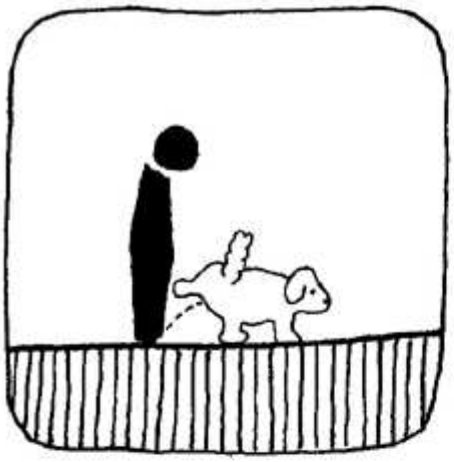

जानवर जगह-जगह मूतकर
अपना क्षेत्र निर्धारित करते हैं।

कुछ लोग अच्छी सेहत के लिए
अपना मूत्र पीते भी हैं।

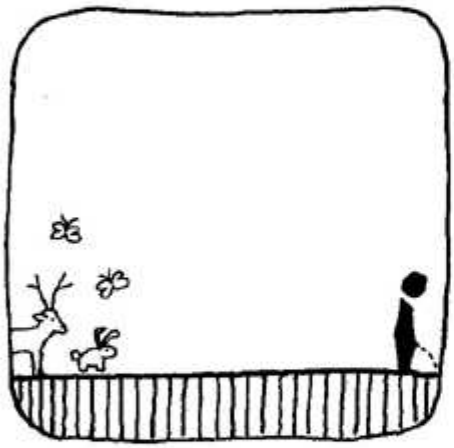

शिकारी मूत्र के नमक से जानवरों
को आकर्षित करते हैं।

कटे पर मूतना दवाई का काम
करता है।

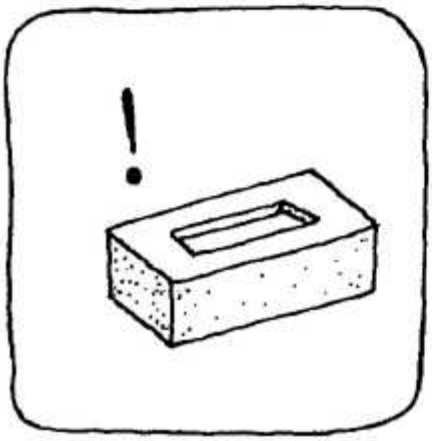

मिट्टी में पेशाब मिलाने से
दीवार मजबूत बनती है।

सचमुच! मूत्र में कोई गहरा सूत्र है।

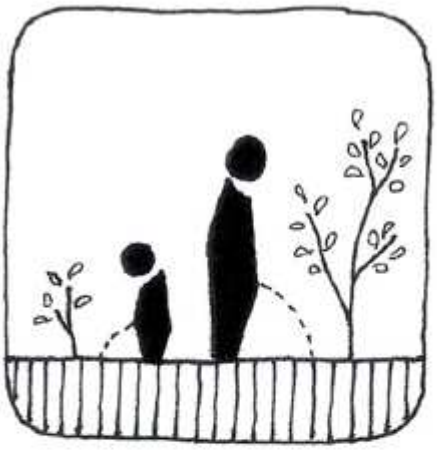

बड़ों का पेशाब बच्चों की
अपेक्षा ज्यादा उर्वर होता है।

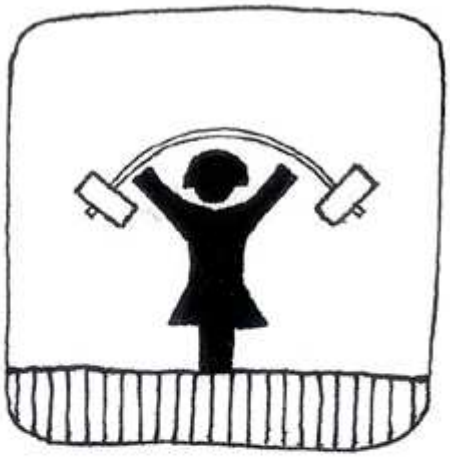

स्वस्थ्य इंसान का पेशाब
कीटाणु मुक्त होता है।

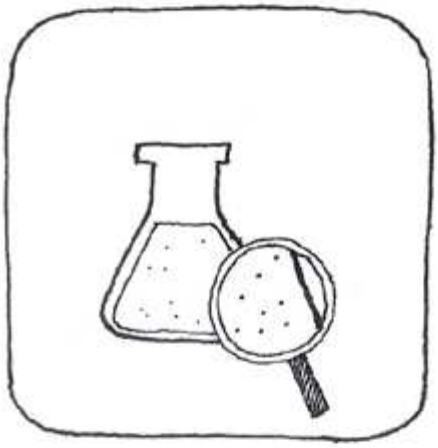

परंतु सुरक्षा के लिहाज से
अच्छा यही होगा...

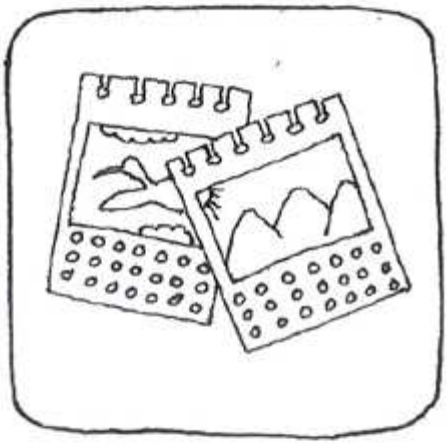

....कि हम पेशाब को पहले
इकट्ठा करके उसे कुछ महीने रखें।

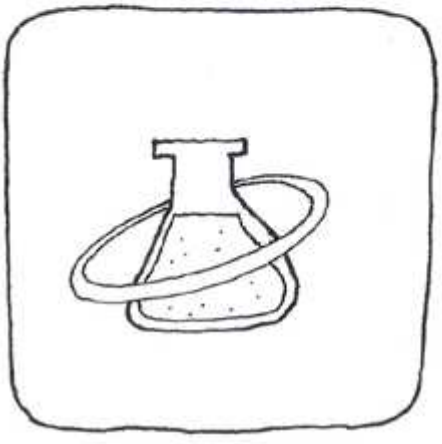

फिर वो उपयोग के लिए
पूर्णतः सुरक्षित होगा!

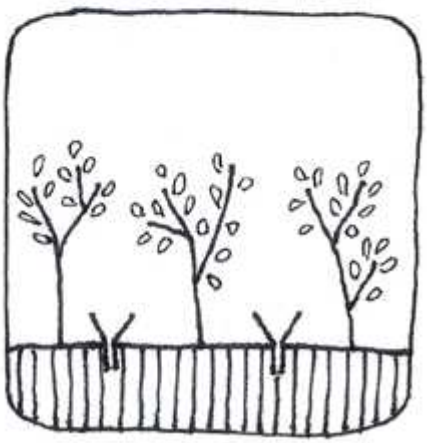

तब उसे सभी तरह की फसलों
पर उपयोग किया जा सकता है।

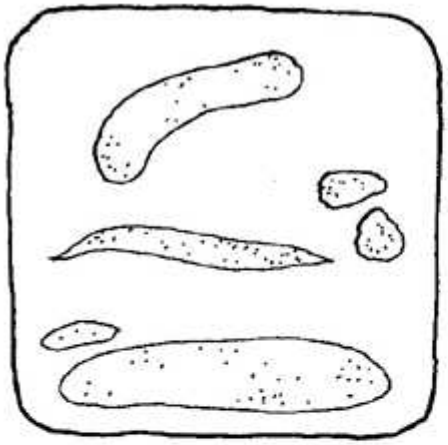

मल (टट्टी) के भिन्न-भिन्न रूप-रंग होते हैं।

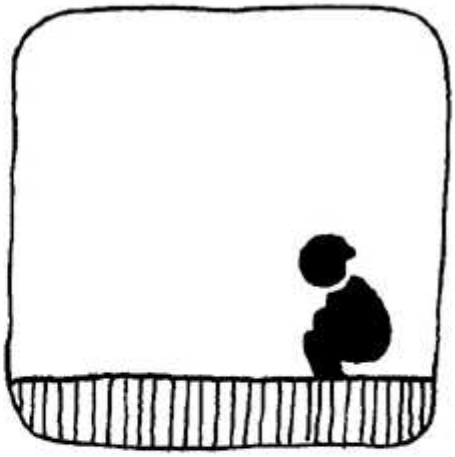

पर बारिश हो या गर्मी, सभी शौच जाते ही हैं।

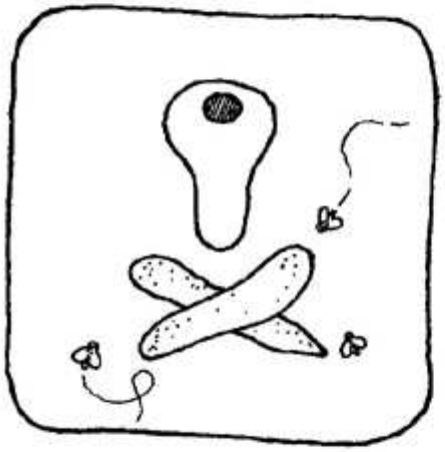

परंतु मल से हमें सावधान रहना चाहिए! उसमें खतरा है!

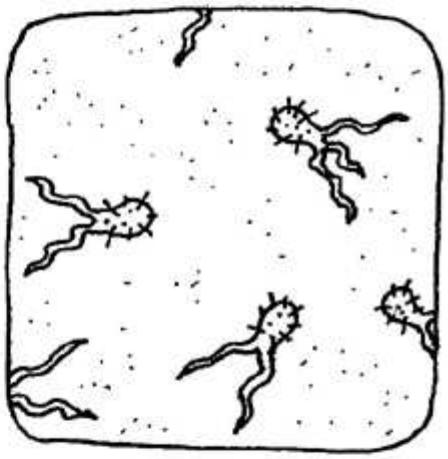

मल कीट-कीटाणुओं से लबालब भरा होता है।

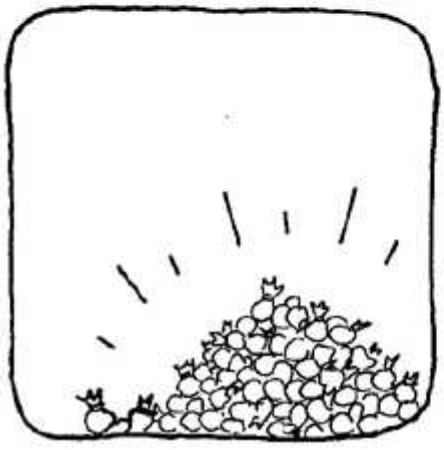

परंतु उसमें तमाम पौष्टिक तत्व भी होते हैं।

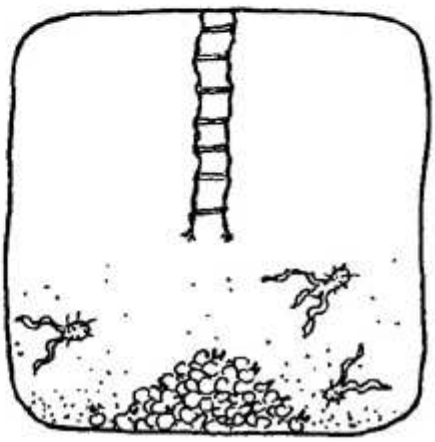

मल उपयोग करने से पहले हमें उसे कीट-कीटाणुओं से मुक्त करना होगा।

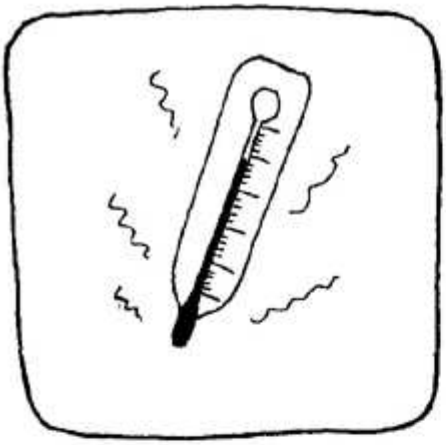

इसके लिए हम मल को उच्च तापमान पर गर्म कर सकते हैं।

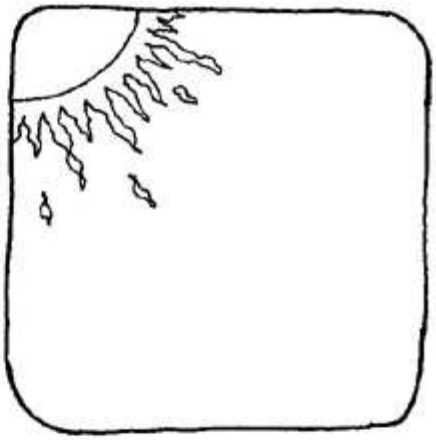

या फिर उस पर सूर्य की पराबैंगनी किरणें डाल सकते हैं।

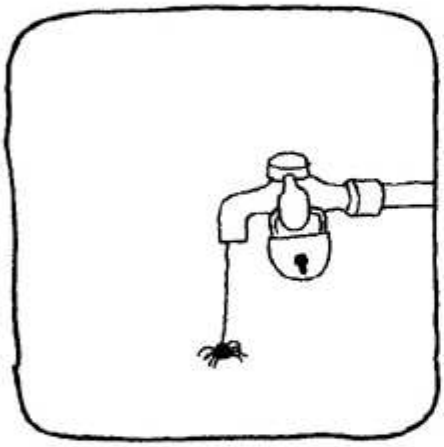

मल को सूखा रखना भी लाभदायक होता है।

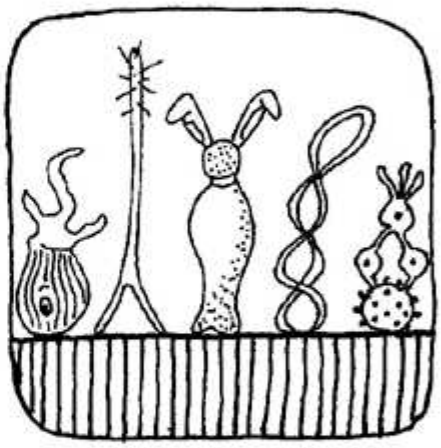

उसमें बाहर से ऐसे कीटाणु डाले जा सकते हैं जो हानिकारक कीटाणुओं का सफाया करें।

तमाम हानिकारक कीटाणु हवा के सम्पर्क से मर जाते हैं।

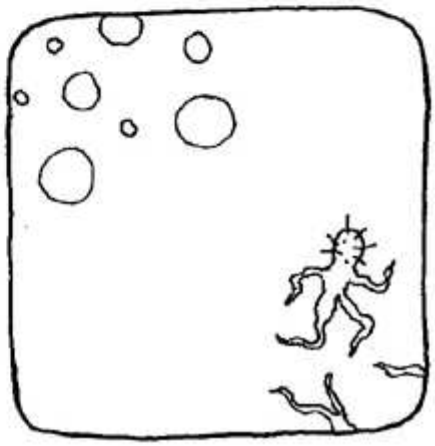

क्षारता बढ़ने से भी कीटाणु दूर भागते हैं।

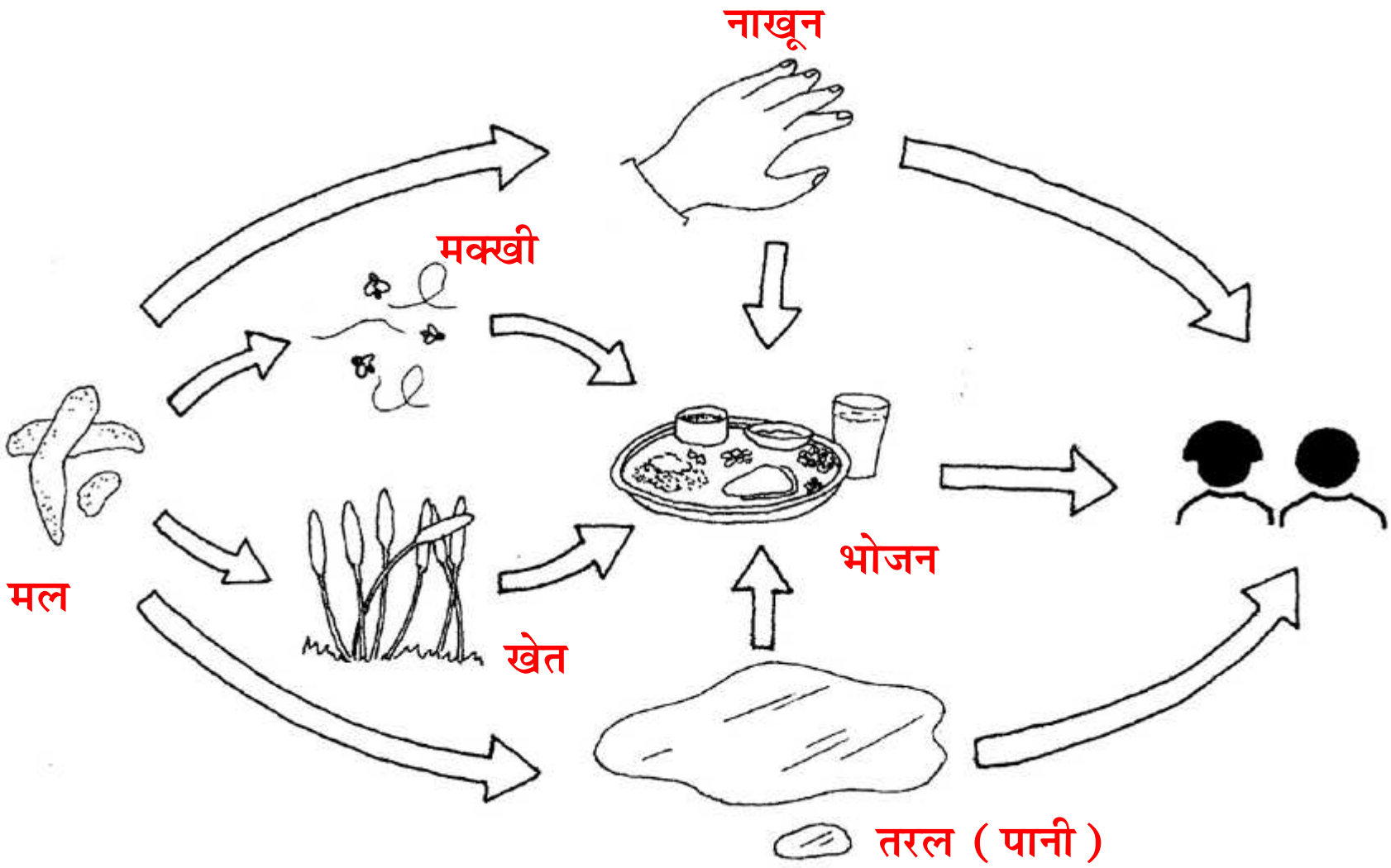

इन रास्तों से कीट-कीटाणु हम तक पहुंचते हैं।

सिर्फ शौचालय होना अच्छी
सेहत की गारंटी नहीं है।

हमारे तौर-तरीके भी साफ और
सेहतमंद होने चाहिए।

हमें अपने हाथ साबुन से धोना चाहिए।

खासकर शौच जाने के बाद।

और खाना बनाने या खाने से पहले।

इससे हम बीमारियों की संभावनाओं
को बहुत कम कर सकते हैं!

तकनीक और जादू

क्यों न अपनी आदतें बदलें?

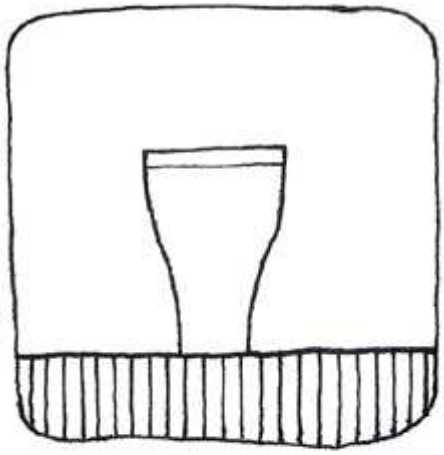

एक गिलास में साफ, ठंडा पानी भरें।

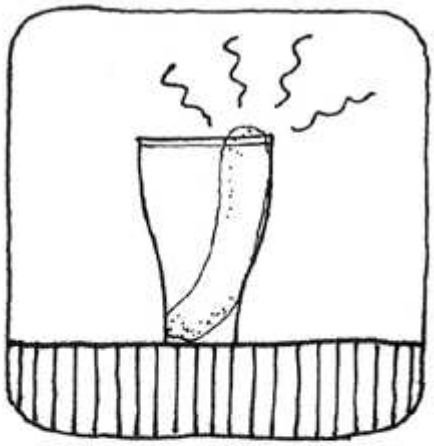

फिर उसमें कुछ मल डालें।

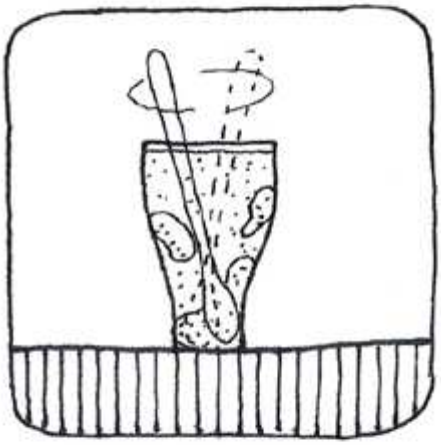

धीरे से मिलाएं। बाहर नहीं छलकने दें।

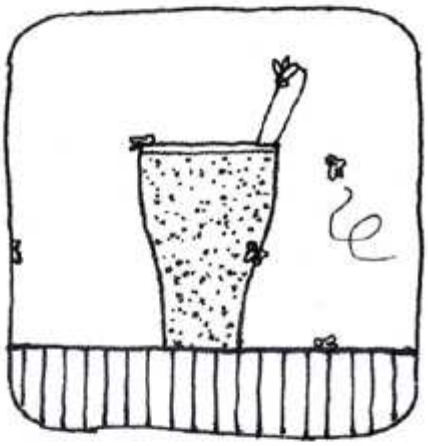

फिर...

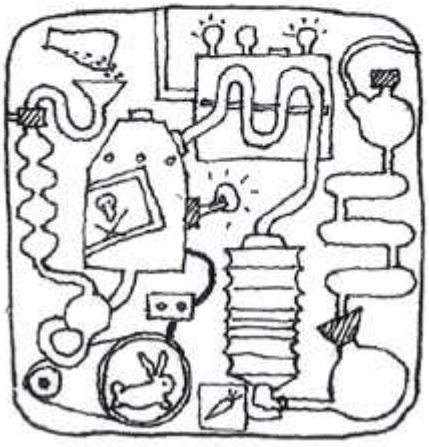

उच्च तकनीक के जादू से गंदा पानी फिर से साफ हो जाएगा!!

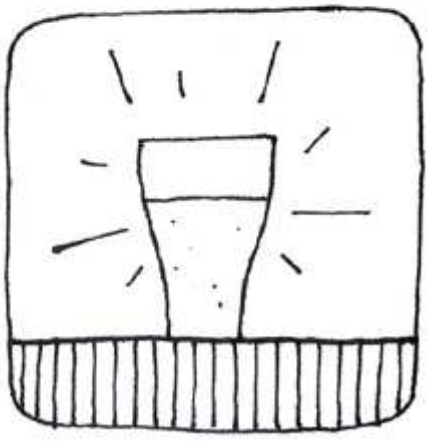

गिलास फिर साफ पानी से भर जाएगा! भले ही मात्रा कुछ कम हो!

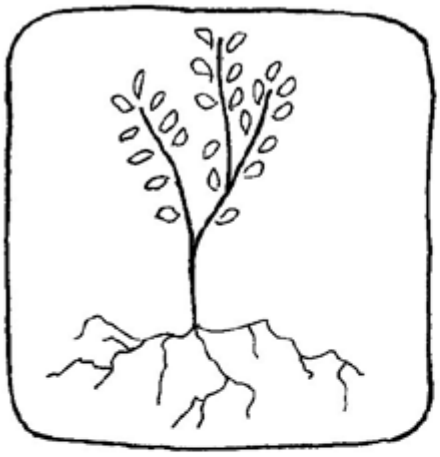

पाधौं की जड़ें हमेशा पौष्टिक तत्वों और पानी को खोजती हैं।

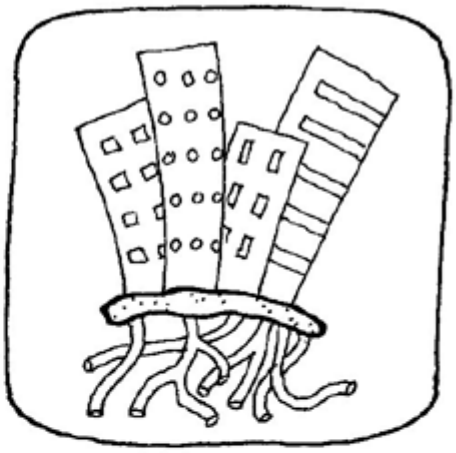

जबकि शहर के सीवर हमेशा इन्हें बाहर फेंकते हैं।

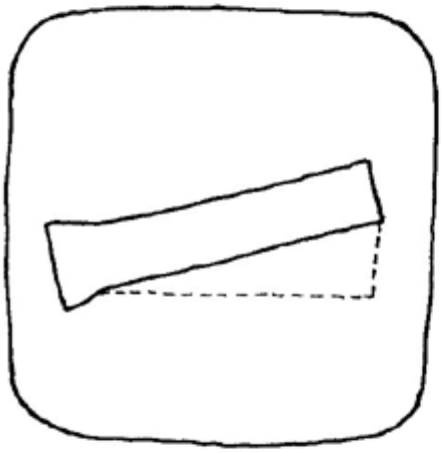

यहां हल्के ढलान पर सीवर पॉइपों का एक सघन जाल बिछा होता है।

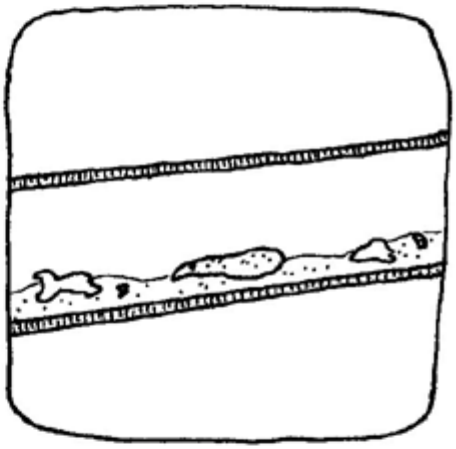

जिससे कि हमारा मलमूत्र चिपके बिना आगे को फिसलता रहे।

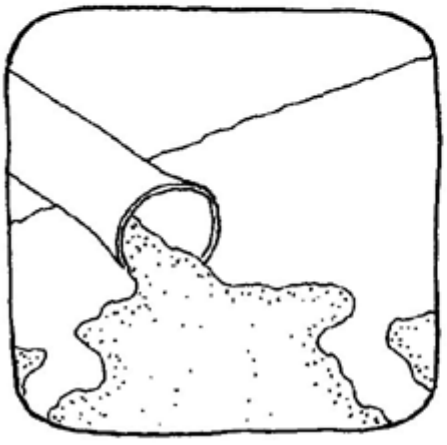

जब तक वो नदी या समुद्र तक नहीं पहुंच जाए।

बस यही सच और असलियत है।

लोगों द्वारा फेंके हुए कचरे की
जरा कल्पना करें।

पूरी दुनिया में यही सिलसिला जारी है।

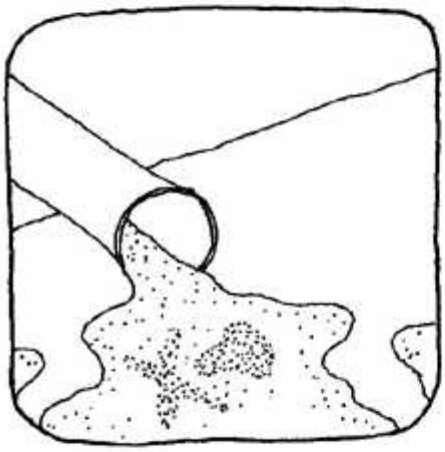

हम विषैले जहर फेंकते हैं।

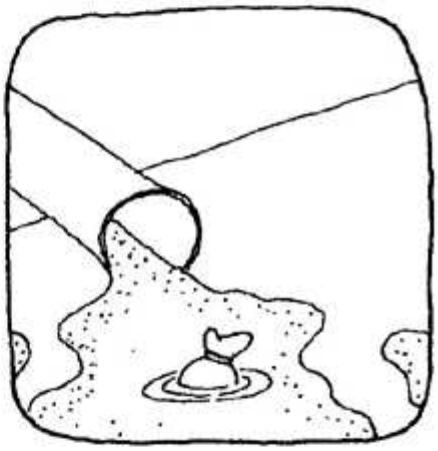

और उनके साथ-साथ कीमती
पौष्टिक तत्व भी!

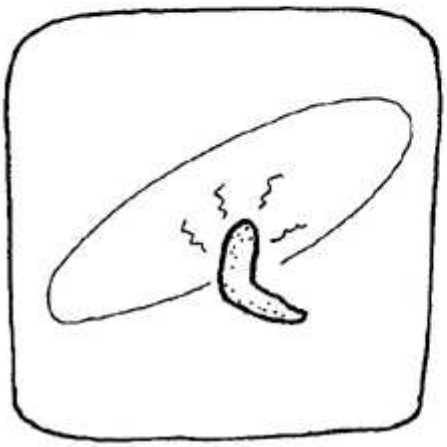

जो जैसा बोता है,
वैसा फल भी पाता है।

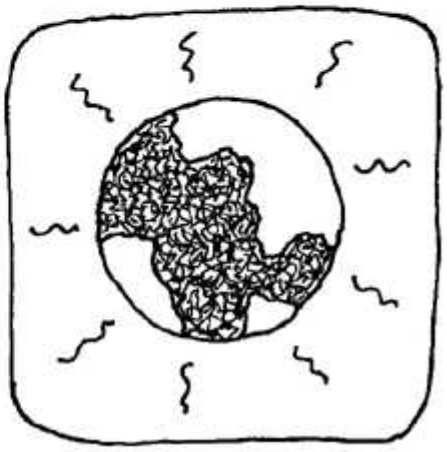

ज्यादा कहने की जरूरत ही नहीं है।

बनाने का तरीका

पहले तरीका, बाद में फल

सोक-पिट

हम सब ने चलनी देखी है।

सोक-पिट वो जगह है जहां जमीन एक चलनी का काम करती है।

जब मल से गड्ढा भरेगा तो उसे निकालना जरूरी होगा।

इसलिए दो गड्ढे बनाना बेहतर होगा।

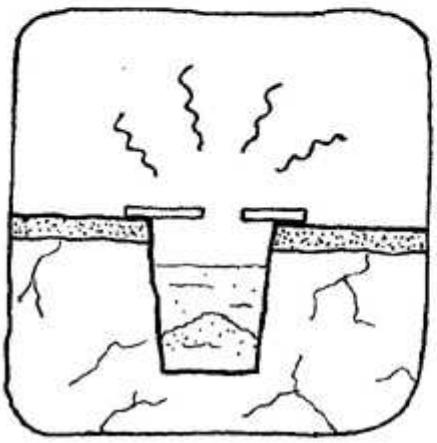

सख्त और पथरीली जमीन में सोक-पिट फेल होते हैं।

जहां जल-स्तर ऊपर हो वहां सोक-पिट नहीं बनाने चाहिए।

सोक-पिट के भरने के बाद उसे ऊपर से बंद कर छोड़ दें।

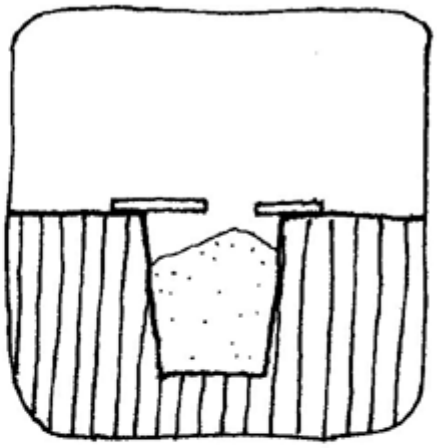

पहला गड्ढा मल से भरने के बाद...

...पास में ही दूसरा गड्ढा खोदें।

फिर पहले गड्ढे में एक पौधा लगाएं!

और दूसरे गड्ढे का नियमित उपयोग करें।

फिर शौच करते समय लहलहाते पेड़ों का मजा लें!

सेप्टिक टैंक

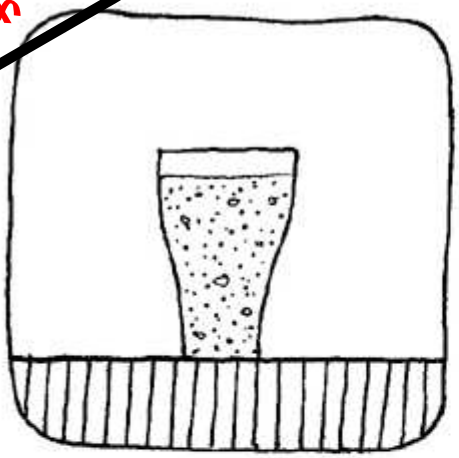

मटमैला पानी से भरा एक गिलास अपने सामने रखें।

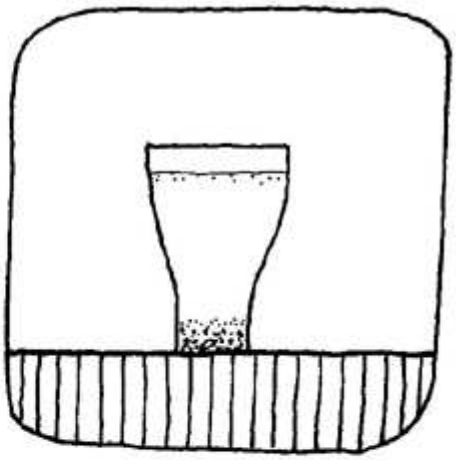

थोड़ी देर में भारी मिट्टी नीचे बैठेगी और हल्की मिट्टी तैरेगी।

मध्य के साफ पानी को बाहर निकालने की कल्पना करें।

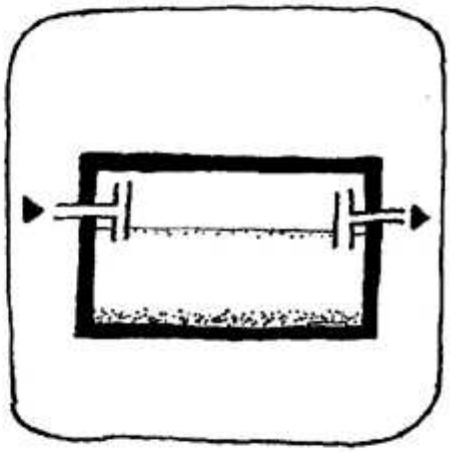

सेप्टिक टैंक भी लगभग इसी सिद्धांत पर काम करता है!

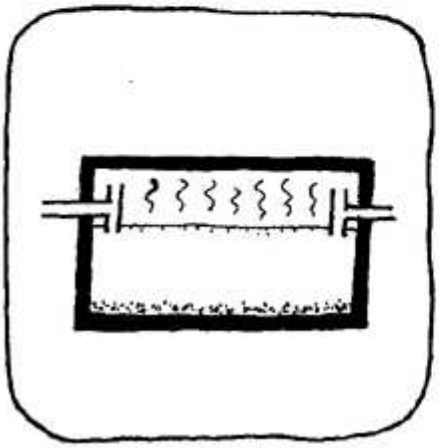

हवा के अभाव में यहां बैक्टीरिया मल को हजम करता है।

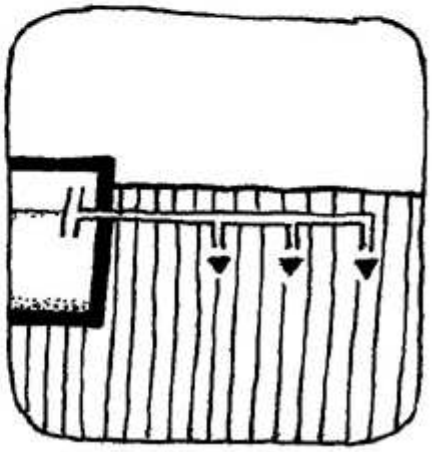

और मध्य भाग को जमीन सोख लेती है।

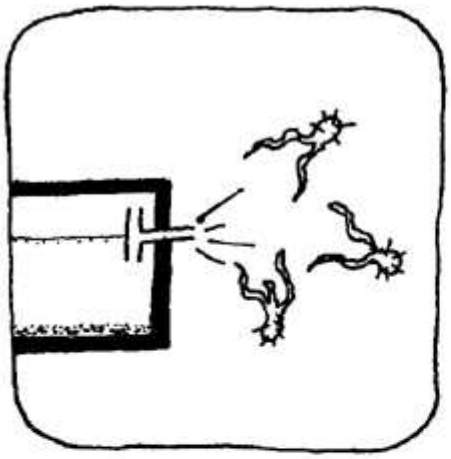

परंतु इसमें भी तमाम हानिकारक कीटाणु होते हैं।

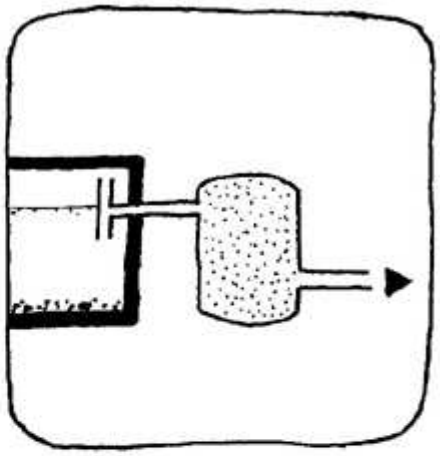

इसलिए उपयोग से पहले इसे दुबारा साफ करना जरूरी होगा।

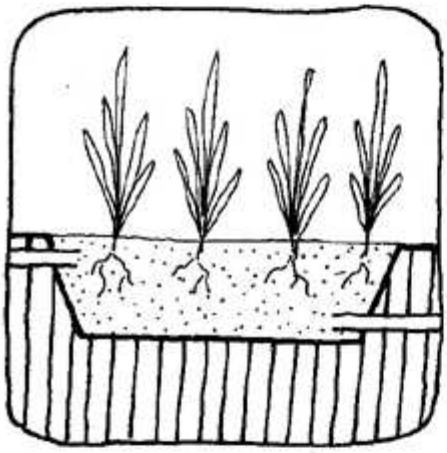

इसके लिए प्राकृतिक फिल्टर भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

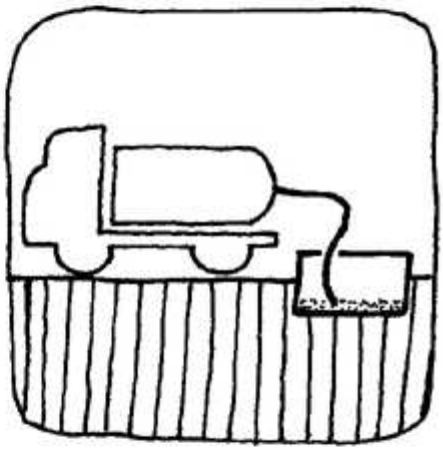

टंकी की गाद/कीचड़ को समय-समय पर निकालकर...

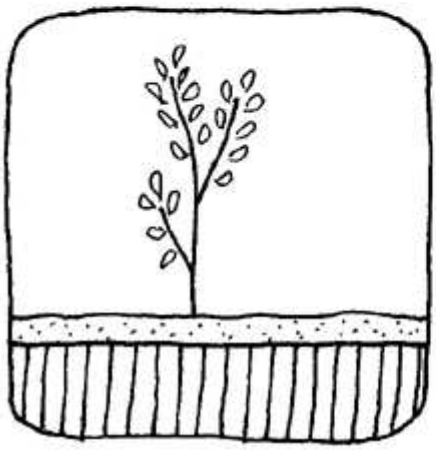

...उसका अच्छी खाद जैसे उपयोग करें।

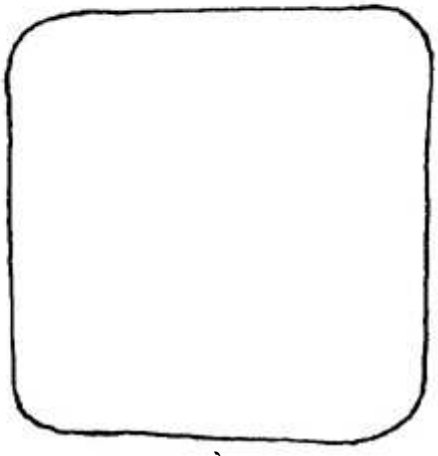

इस स्थान को जानबूझ कर मनन-चिंतन के लिए खाली रखा गया है।

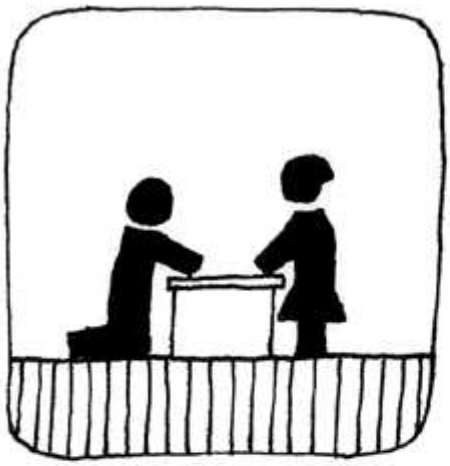

खाद बनाने वाले शौचालय का निर्माण सरल है।

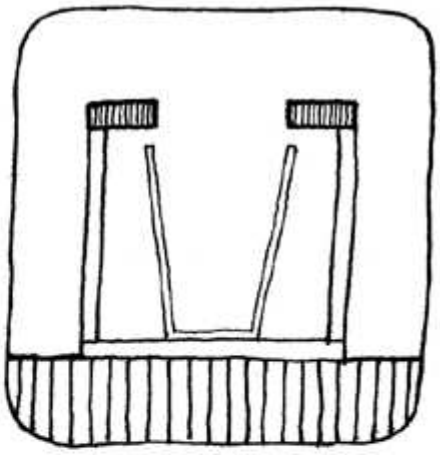

इसके लिए सिर्फ छेद वाला डिब्बा और एक बाल्टी चाहिए।

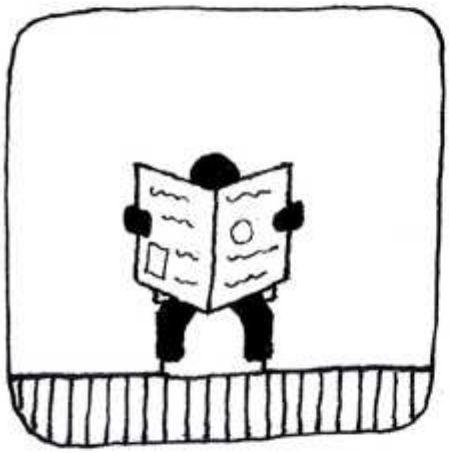

आप इस पर सीधे या फिर उकड़ूं बैठ सकते हैं।

शौच के बाद आप उस पर कुछ मिट्टी डाल सकते हैं।

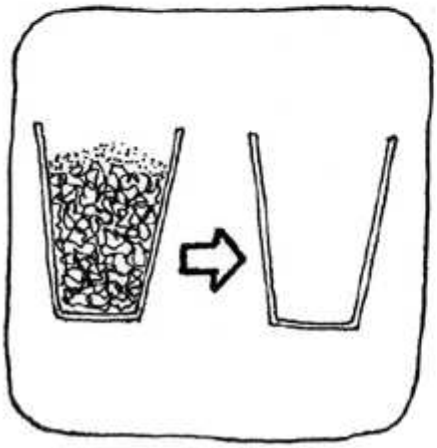

बाल्टी भरने पर उसकी जगह दूसरी बाल्टी रखें।

और पहली बाल्टी को खाद के गड्ढे में उलट दें। इसमें कोई बदबू नहीं होगी।

बायोगैस टैंक

बाहर शोर-शराबे में पेट की गैस को जोर से निकालने में मजा आता है।

अक्सर बिना आवाज वाली गैसें अधिक बदबूदार होती हैं।

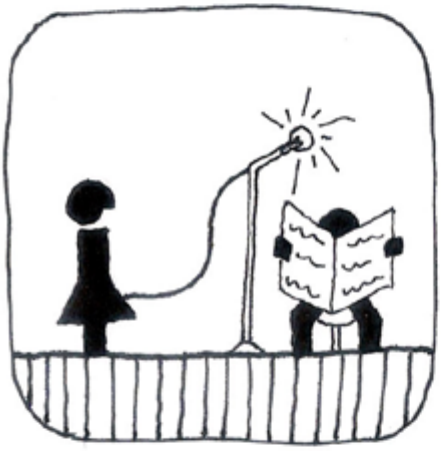

क्यों ने पेट की गैसों का कुछ अच्छा उपयोग करें?

कुछ बैक्टीरिया हवा के अभाव में मल को हजम करके गैस बनाते हैं!

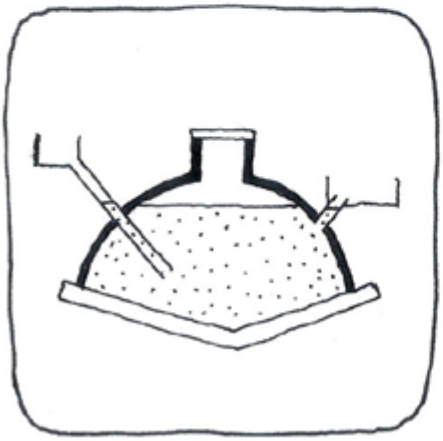

बायोगैस प्लांट में बस यही होता है।

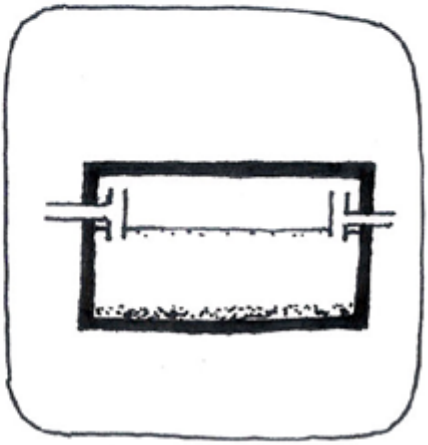

बायोगैस प्लांट कई मायनों में सैप्टिक टैंक जैसा ही होता है।

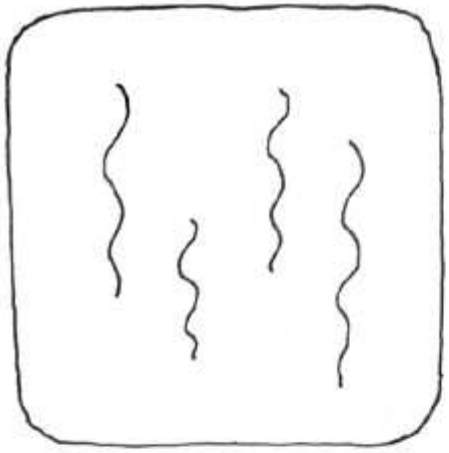

बैक्टीरिया जो गैस पैदा करते हैं..

... उस गैस से हम खाना पका सकते हैं।

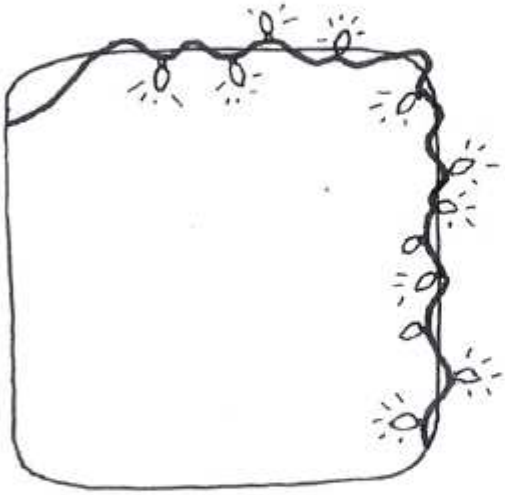

और अपने घर को बल्बों से रोशन भी कर सकते हैं।

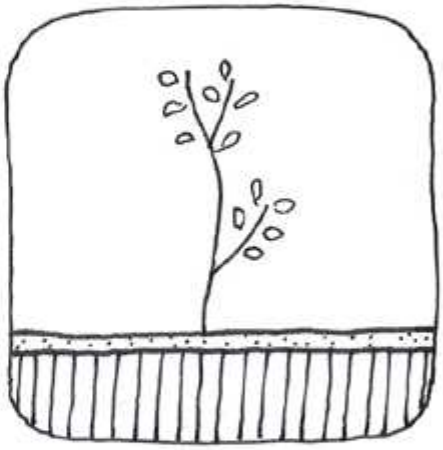

बायोगैस प्लांट की कीचड़ दरअसल बहुत उम्दा खाद होती है।

इस स्थिति में हरेक की जीत होगी।

वाह! क्या बात है!

मल अलग, मूत्र अलग

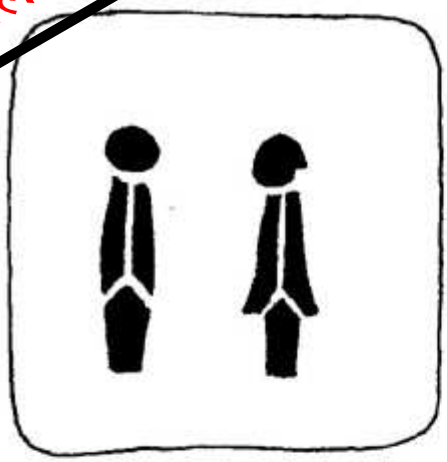

प्रकृति ने हमें मल और मूत्र के लिए अलग-अलग नलियां दी हैं।

कारण स्पष्ट है! मूत्र सुरक्षित है, जबकि मल खतरनाक है!

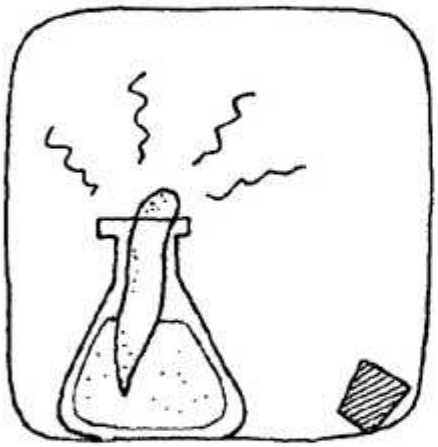

फिर शौचालय में उन्हें क्यों मिलाएं?

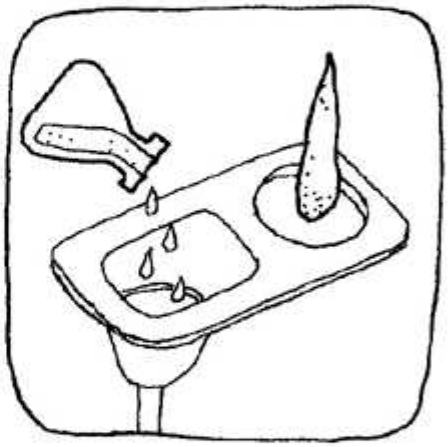

मल और मूत्र को अलग-अलग रखने में ही समझदारी है!

यहां शौच के समय मल और मूत्र अलग-अलग रहेंगे।

बाद में मल को मिट्टी से ढंक दें।

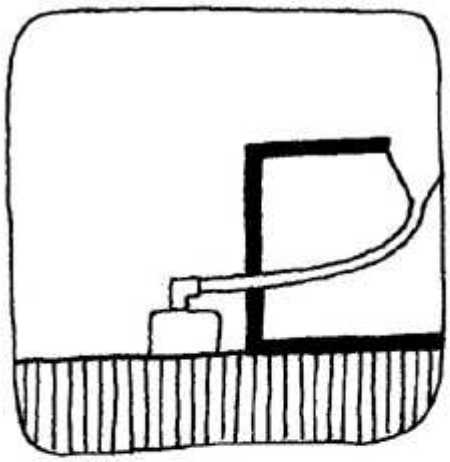

पेशाब अलग एकत्र करें या उसे जमीन द्वारा सोखने दें।

मल से दूर हटकर खुद को धोकर साफ करें।

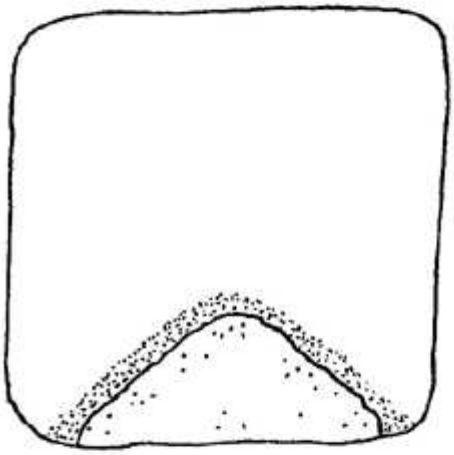

मिट्टी ढंकने से मल सूखेगा और उसमें बदबू भी नहीं आएगी।

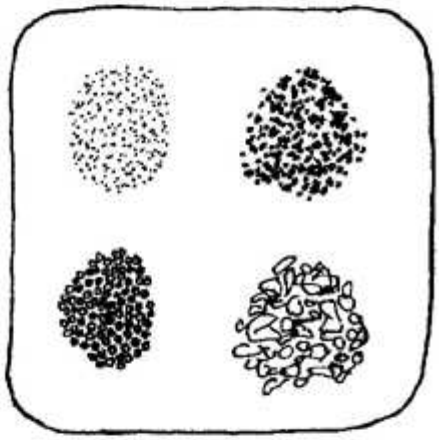

राख, सूखी पत्तियां, भूसा आदि मल ढंकने के लिए बढ़िया चीजें हैं।

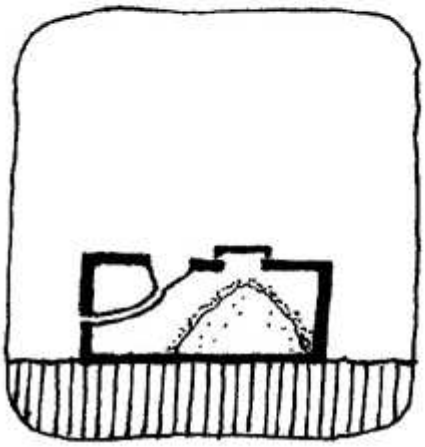

टंकी भरने के बाद मल को एक साल तक अलग रखने से...

.... वो पूरी तरह सुरक्षित हो जाएगा। फिर उसे आप हाथ से निकाल पाएंगे।

उसमें बिल्कुल बदबू नहीं होगी
और वो गंदा भी नहीं दिखेगा!

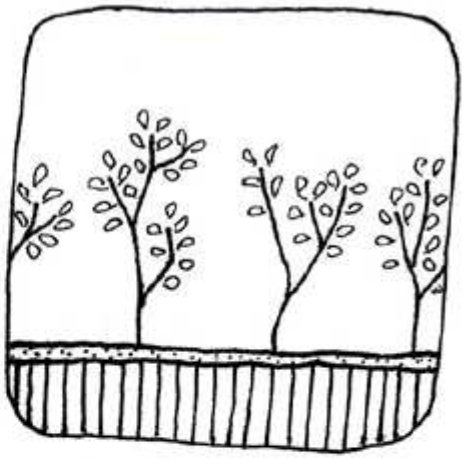

फिर उसका आप खेत में खाद
जैसे उपयोग करें।

ऐसे शौचालयों से ढेर सारा
पानी बचेगा!

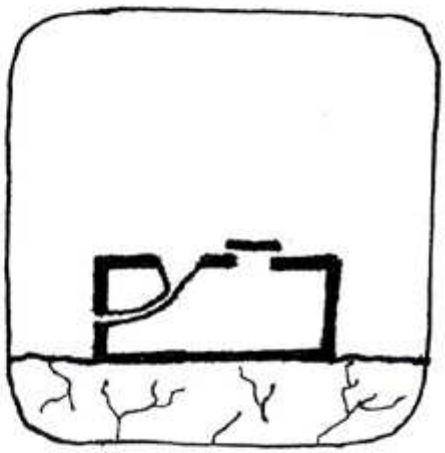

इन शौचालयों को पथरीले इलाकों
में भी बनाया जा सकता है।

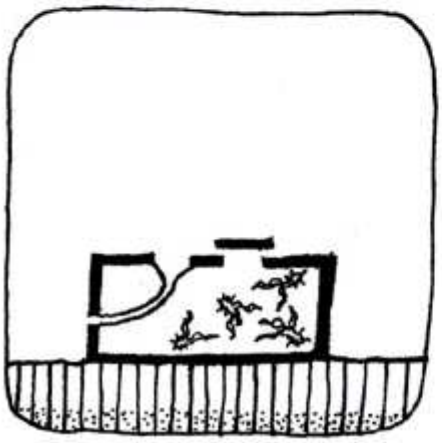

क्योंकि यहां मल और मूत्र अलग-अलग
रहता है इसलिए बाढ़-ग्रस्त इलाकों के
लिए यह शौचालय आदर्श हैं।

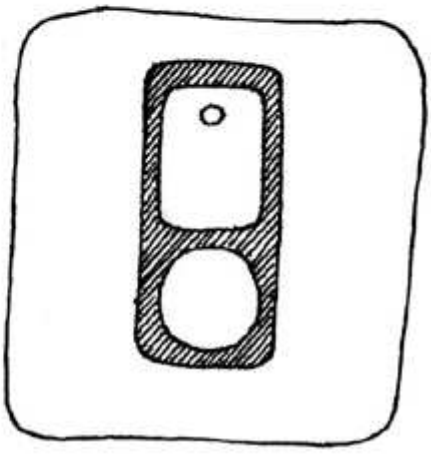

यहां मूत्र, मल से अलग रहता है
और मल को सूखने दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

soar.hub@gmail.com

कहानी खत्म, अब आप मजे में गहरी सांस लें!